# शोध छात्र संसाधनों का उठाएं लाभ : डा. मित्तल

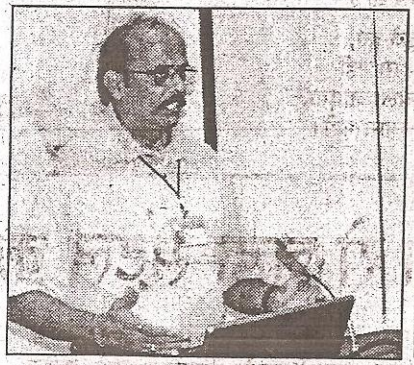

आईआईटी में भूकम्प पर कार्यशाला को सम्बोधित करते प्रोफ़ेसर केके बाजपेयी (बाएं) व सामने बैठे छात्र। फोटो : एसएनबी

## आईआईटी में दस दिवसीय 'भूकम्प इंजीनियरिंग साहित्य सर्वे' विषयक कार्यशाला शुरू

कानपुर, (एसएनबी)। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) के डीन ऑफ एकेडमिक अफेयर्स डा. संजय मित्तल ने कहा कि शोध छात्र अपने विषय पर गंभीरता से अध्ययन करके आईआईटी के मौजूदा संसाधनों का लाभ उठाएं।

डा. मित्तल आईआईटी एनआईसीईई केंद्र के तत्वावधान में पीबीसीई सभागार में गुरुवार को आयोजित 'भूकम्प इंजीनियरिंग साहित्य सर्वे' विषयक कार्यशाला के उद्घाटन समारोह में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि शोध करने वाले छात्रों को बेहतर कामों में अनावश्यक छेड़छाड़ नहीं करनी चाहिए। ऐसा करने से शोध कार्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। अन्य राज्यों के इंजीनियरिंग संस्थानों से शोध के लिए आये छात्रों को आईआईटी कानपुर के मैटेरियल का भरपूर लाभ उठाना चाहिए।

सिविल इंजीनियरिंग विभाग के प्रो. सुरेश एलावादी ने कहा कि भूकम्प खनिज लवणों के एकत्रीकरण से आता है। जब धरती की सतह पर काफी मात्रा में खनिज एकत्र हो जाता है तो उस क्षेत्र में भूकम्प आने की संभावना बढ़ जाती है। उन्होंने कहा कि वर्ष 1991 में उत्तरकाशी और 2001 में गुजरात के भुज इलाके में भूकम्प आया था। आईआईटी कानपुर के प्रयोगशाला प्रभारी डा. केके बाजपेयी ने कहा कि संस्थान में भूकम्प के कारणों पर पिछले कई सालों से शोध चल रहा है। इसमें कुछ शोध सफल भी हो चुके हैं। उन्होंने कार्यशाला के प्रतिभागी छात्र-छात्राओं को भूकम्परोधी तकनीकी जानकारियां भी प्रदान की।

कार्यशाला के समन्वयक डा. दुर्गेश सी राय ने अन्य राज्यों से आये छात्र-छात्राओं का स्वागत करते हुए कहा कि दस दिन तक चलने वाली इस कार्यशाला में देशभर के 25 इंजीनियरिंग संस्थानों से कुल 60 एमटेक के शोध छात्र-छात्राएं भाग ले रहे हैं। उन्होंने कहा कि शोध कार्य से जुड़े छात्र-छात्राओं का आईआईटी से लगातार सम्पर्क बना रहेगा। उन्होंने बताया कि कार्यशाला में बेहतर शोध कार्य का चयन भी किया जायेगा।